BA I, Psy (H)

Paper II abnormal Psy.

Types of Schizophrenia (मनोविदालिता का प्रकार)

मनोविदालिता कई प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित हैं।

(1) बचपन प्रकार की मनोविदालिता (Childhood type of schizophrenia) - इस प्रकार के मनोविदालिता में रोगी के स्नायुमण्डल में विकृति आ जाती है जिसके कारण शारीरिक विकास में विकार उत्पन्न हो सकते हैं इसका प्रमुख लक्षण दिवास्वप्न देखना, संवेगात्मक अवसाद तथा बौद्धिक विखंडन आदि है।

(2) साधारण प्रकार की मनोविदालिता (Schizophrenia) (Simple type of Schizophrenia) इस प्रकार की मनोविदालिता का लक्षण है कि इसमें रोगी अपने प्रति बिल्कुल उदासीन हो जाता है वह बोलना कम कर देता है अपने आप में खोया रहता है तथा बुद्धि का व्यक्तित्व विखंडित हो जाता है जिसके कारण उनमें संवेगात्मक विकार बढ़ जाता है और वे सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में पूरी तरह असफल हो जाते हैं।

(3) मनोकुंठा-ग्रस्त मनोविदालिता (~~Heberphreni~~ heberphrenia type of schizophrenia) इस प्रकार का मनोविदालिता मुख्य रूप से युवावर्गों में पाया जाता है इसमें रोगी का

व्यक्तित्व विखंडित होने लगता है इसमें बाल्य बुद्धि विभ्रम, संवेगात्मक अस्थिरता, अव्यवस्थित भाषा असंगत व्यामोह की प्रधानता रहती है इसमें रोगी अपने संबंधी काल्पनिक पात्रों से करने लगता है तथा उनसे बातें करते रहता है उसका चिन्तन धार्मिक, सामाजिक एवं दार्शनिक स्वरूप की अधिक होती है

(4) स्थिर व्यामोहात्मक मनोविदालिता (Paranoid Type Schizophrenia) :- इस प्रकार की मनोविदालिता 30-35 वर्षों के व्यक्तियों में पाया जाता है इसमें रोगी उत्पीड़न व्यामोह से पीड़ित होता है रोगी के संवेगात्मक और मानसिक प्रक्रियाओं में विकृति आ जाती है यह स्वकेंद्रित हो जाता है उसके चिन्तन एवं निर्णय लेने की शक्ति खत्म हो जाती है वह शक्की स्वभाव का हो जाता है उसे हमेशा लगते रहता है कि कोई उसकी आलोचना कर रहा है तथा उसके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा है

(5) सामान्य ह्रासजन्य मनोविदालिता (Catatonic type of Schizophrenia) :- इसमें व्यक्ति वास्तविकता से हटकर कल्पना में खोने लगता है तथा उस कार्य को करने लगता है जो सामान्य से विपरीत हो। इस प्रकार की मनोविदालिता में दो प्रकार की अवस्थाएं होती है उत्तेजित अवस्था: में रोगी उत्तेजित होकर व्यर्थ की बातें जोर जोर से करने लगता है। दूसरा मूर्छित अवस्था - इसमें रोगी स्थिर एवं शांत रहता है वह एक ही मुद्रा

में बैठा रहता है या खड़ा रहता है।

(6) अवशिष्ट प्रकार की मनोविदालिता (Residual type of Schizophrenia) – इस प्रकार के रोगी के उपचार हो जाने के पश्चात भी कुछ लक्षण शेष रह जाते हैं जो कुछ समय के बाद उग्र हो सकते हैं।

(7) तीव्र अविभेदित प्रकार की मनोविदालिता (Acute undifferential type of Schizophrenia — मनोविदालिता के पश्चात की एक प्रकार की स्थिति को ही अवशिष्ट प्रकार की मनोविदालिता कहा जाता है। इस प्रकार की मनोविदालिता में रोगी का उपचार हो जाने के पश्चात भी कुछ लक्षण शेष रह जाने के कारण कुछ समय बाद उग्र हो सकता है।

Kumar Patel
Assistant professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara.